ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-3* June- 2021
Anthology : The Research

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के अग्रदूत : रामकिंकर बैज
Adhunik Bhartiya Murtikala ke Agradoot : Ramkinkar Baij

Paper Submission: 03/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

सविता वर्मा
सह–आचार्य
चित्रकला विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के जनक कहे जाने वाले रामकिंकर बैज केवल प्रतिष्ठित मूर्तिकार ही नहीं थे अपितु चित्रकार, ग्राफिक आर्टिस्ट और संगीतकार भी थे। मूर्तिकला में आधुनिक कला की सभी प्रवृतियों यथार्थवाद, धनवाद से लेकर अतियथार्थवाद तक को अपनाया और चित्रकला में भी नए नए प्रयोग किए। अमूर्तन और अभिव्यंजनावादी शैली में काम करने वाले वह भारत के प्रथम मूर्तिकार थे। कला में उनके अतुल्य योगदान के लिए 1970 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। आज हम समकालीन भारतीय कला परिदृश्य पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि उनके समकक्ष कोई मूर्तिकार नहीं है।

Known as the father of modern Indian sculpture, Ramkinkar Baij was not only an eminent sculptor but also a painter, graphic artist and musician. Sculpture adopted all the trends of modern art from realism, moneyism to surrealism and also made new experiments in painting. He was the first sculptor in India to work in the abstract and expressionist style. He was awarded the Padma Bhushan in 1970 for his incomparable contribution to the arts. Today, if we look at the contemporary Indian art scene, we find that there is no sculptor equal to him.

मुख्य शब्द : सक्षमाकृति, पुनर्जागरण, भविष्यवाद, अभिव्यंजनावाद, अग्रदूत, शिल्पाकृतियां, अतियथार्थवाद, अमूर्तन, पद्मभूषण, जीविकोपार्जन, परिदृश्य, सुदृढ़ता, गौरवान्वित, निष्प्राण।

Enabling, Renaissance, Futurism, Expressionism, Forerunner, Artifacts, Surrealism, Abstraction, Padma Bhushan, Earning a living, Landscape, Solidity, Glorious, Lifeless.

प्रस्तावना

सृष्टा और सृष्टि इन दोनों के बीच में रहता है उपादान। वस्तुगत उपादानों के आधार पर शिल्पी की प्रज्ञा जिस विकार को सूक्ष्माकृति या बीज रूप में प्राप्त करती है वह प्रयुक्ति और शैली के संयोजन से किसी रूपाकृति में अभिव्यक्त होती है। दूसरे शब्दों में, कलाकार के मन में जो कुछ एकांत भावना के तौर पर विद्यमान था, वह उपादान के अनुयोग तथा उपकरण कौशल और शैली के द्वारा इन स्तरों का अतिक्रम कर चाक्षुक होता है। अर्थात भावना जब वस्तुनिष्ठ होकर निर्मिती में ढल जाती है तब उसमें गुणात्मक परिवर्तन घटित होता है। इसलिए विभिन्न उपादानों के 'स्व– स्व' भाव एवं गुणों के बारे में कलाकार को सजग रहना पड़ता है। काष्ठ और पत्थर की मूर्ति निर्माण के समय धातु ढालनेवाली पद्धति वहाँ एकदम अनावश्यक हो जाती है क्योंकि इसके लिए अलग तरह की निर्माण प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला का प्रारम्भ 19 में शताब्दी से माना जाता है, जो कि तत्कालीन समय में हुए परिवर्तनों का परिणाम था। इस समय भारतीय पुनर्जागरण के कलाकारों ने आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के मार्ग को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिस प्रकार आधुनिक भारतीय चित्रकला को प्रारंभ करने का श्रेय अवनींद्रनाथ टैगोर को दिया जाता है उसी प्रकार आधुनिक भारतीय मूर्तिकला को प्रारंभ करने का श्रेय रामकिंकर बैज को दिया जाता है। रामकिंकर बैज को आधुनिक भारतीय मूर्तिकला का जनक भी कहा गया है। ये अनेक परवर्ती मूर्तिकारों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं

18 वीं शताब्दी में भारतीय मूर्तिकला निष्प्राण होती जा रही थी, इस समय भारतीय मूर्तिकला को ब्रिटिश संरक्षण व प्रोत्साहन नहीं मिला, जबकि इस

समय ब्रिटिश साम्राज्य का प्रभाव बढ़ चुका था। ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजों ने भारत के विभिन्न स्थापन स्थानों पर कला विद्यालयों की स्थापना की। इन कला विद्यालयों में कला के क्षेत्र में यूरोपीय पद्धति को बढ़ावा दिया जाता था। इस समय के मूर्ति शिल्पों में पाश्चात्य प्रभाव जैसे यथार्थवाद, घनवाद, भविष्यवाद, अभिव्यंजनावाद आदि का समावेश दिखाई देता था। 19वीं सदी के अंत तक स्वदेशी आंदोलन के कारण स्वदेशी कला के पुनर्जागरण की ओर कलाकारों का ध्यान आकर्षित हुआ और कलकत्ता के गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट के प्रिंसिपल ई.वी.हैवल व अवनींद्र नाथ ठाकुर ने भारतीय कलाओं की विशेषताओं को विकसित करने का प्रयास किया। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरुप कलकत्ता के इंडियन सोसायटी ऑफ आर्ट की स्थापना हुई। इस समय के मूर्तिकारों में रोहित, फणींद्र नाथ बोस, हरिण्यमय राय चौधरी, देवी प्रसाद राय चौधरी आदि प्रमुख थे।

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में विदेशी मूर्तिशिल्पों का आकर्षण संपन्न लोगों में अत्यधिक था। इस वर्ग के लोग अपने घरों में विदेशी मूर्तिशिल्पों की सजावट करके अपनी संपन्नता का प्रदर्शन करने मं। गौरव महसूस करते थे। इस प्रकार की विपरीत परिस्थितियों में यूरोपीय शैली से हटकर मूर्तिशिल्प में भारतीय तत्वों का समावेश करने का साहस देवी प्रसाद राय चौधरी ने दिखाया एवं रामकिंकर बैज ने आधुनिक भारतीय मूर्तिकला में नए आयामों की स्थापना कर इसे और अधिक सुदृढता समृद्धि प्रदान की। इन्होंने अपने मूर्तिशिल्पों द्वारा जन–साधारण को गौरवान्वित किया।

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के अग्रदूत रामकिंकर बैज का जन्म पश्चिम बंगाल के बांकुरा में एक आर्थिक और सामाजिक रूप से विपन्न परिवार में हुआ। आधुनिक भारत के सर्वोत्कृष्ट कलाकारों में से एक रामकिंकर बैज न केवल प्रतिष्ठित मूर्तिकार थे बल्कि चित्रकार, ग्राफिक आर्टिस्ट और संगीतकार भी थे। उनके इसी जन्मजात गुण को देखते हुए बांग्ला पत्रकार रामानंद चटर्जी ने उन्हें शांतिनिकेतन में दाखिले के लिए प्रेरित किया। शांतिनिकेतन का स्वतंत्र वातावरण उनके जैसे व्यक्तित्व के लिए अनुकूल साबित हुआ। रविंद्र नाथ टैगोर ने शांति निकेतन की स्थापना कला और शिक्षा में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आधुनिकता को सार्थक आयाम देने के लिए ही की थी। नंदलाल बोस जैसे महान कला मनीषी और शिक्षक के सानिध्य में बैज ने कला में डिप्लोमा की डिग्री अर्जित की। नंदलाल बोस और रवीन्द्रनाथ ने उनकी प्रतिभा को उभरने का भरपूर मौका दिया । इनके कला ज्ञान और प्रयोगात्मक अनुभव को देखकर शांति निकेतन के मूर्तिकला विभाग में प्रमुख के पद पर उन्हें कार्य करने का निमंत्रण मिला।1929 में वह कला भवन में ही बिना तनख्वाह के पढ़ाने लगे। इसके बाद वह 1931 में आसनसोल ऊषाग्राम मिशनरी स्कूल और दिल्ली के माडर्न स्कूल में कला शिक्षक रहे और अंत में 1934 से शान्ति निकेतन, कला भवन के मूर्तिकला विभाग में प्रमुख के पद पर कार्य किया।

रामकिंकर बैज कला में नवीनता के हमेशा प्रशंसक रहे और नित नए प्रयोग भी करते रहे। देवीप्रसाद चौधरी के बाद रामकिंकर बैज ने मूर्तिकला में नए आयाम जोड़कर आधुनिक भारतीय मूर्तिकला को सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

1938 में उन्होंने 'संथाल परिवार' की मूर्ति बनायी । देवी देवता, राजा–महाराजा और महान विभूतियों के समकक्ष उन्होंने संथाली परिवार को निर्मित कर साधारण जन को गरिमा प्रदान की जो उनकी सामाजिक राजनीतिक चेतना को दर्शाता है। उन्होंने अपने आसपास के परिवेश का गहन अध्यन किया था। शांतिनिकेतन में बनी उनकी मूर्तियों को देखकर यह जाना जा सकता है कि विषय–वस्तु और बाह्य–परिवेश (जहाँ मूर्तियां स्थापित है) में कैसी अदभुत समरसता वे रचते थे ।

वह पहले भारतीय कलाकार थे जिन्होंने पत्थर, मिट्टी, लकड़ी और धातु जैसे मूर्ति कला के परंपरागत माध्यमों को छोड़कर सीमेंट–कंक्रीट से मूर्तियाँ बनाई। आधुनिक भारतीय मूर्ति कला के जनक रामकिंकर की स्मारकीय शिल्पकृतियों ने सार्वजनिक कला में अपना एक अलग प्रतिमान स्थापित किया। मूर्तिकला में रामकिंकर ने आधुनिक कला की सभी प्रवृतियों यथार्थवाद, घनवाद से लेकर अतियथार्थवाद तक को अपनाया और चित्रकला में भी नए प्रयोग किए। बैज की कला का मुख्य विषय सामान्य जन, रोजमर्रा की जिंदगी और परिवेश से प्रेरित रहा। उनकी कला में वास्तविकता अपने स्वाभाविक भाव में दिखती है। उन्होंने यथार्थवाद से अपने बदलाव के साथ मूर्तिशिल्प के ऊपरी सतह को चिकना नहीं बनाया बल्कि मिट्टी या सीमेंट के स्वाभाविक टेक्सचर में छोड़ा। उनके मूर्तियों का यह खुरदरापन ही उनकी कला की विशेषता बन गयी। कला के व्यवसायिक पहलुओं पर उनका ध्यान कभी नहीं गया। कला को साधना समझने वाले बैज ने शांतिनिकेतन में कई सार्वजनिक मूर्तियों के प्रोजेक्ट पर काम किया।1938 में बनी 'सन्थाल फैमिली'इन्हीं में से एक विशाल आकार में आज भी विश्वविद्यालय प्रांगण में खड़ी है।

अमूर्तन और अभिव्यंजनावादी शैली में काम करने वाले वह भारत के प्रथम मूर्तिकार थे। उस समय भारत में तैल चित्र के रंग नहीं बनते थे, विदेशी कीमती रंगों के विकल्प के रूप में उन्होंने लिनसीड आयल के साथ बाज़ार में उपलब्ध रंगों को मिला कर अपने तरीके का तैल रंग बनाया। 1938 में बने 'द पोएट' को भारत का पहला एब्स्ट्रेक्ट या अमूर्तन शैली का उदाहरण माना जाता है यह पोट्रेट कवि गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर का है। जिसमें भाव और प्रतीकों के माध्यम से कवि के प्रभावशाली चेहरे को अमूर्तन और यथार्थ के संयोजन में बड़ी कुशलता के साथ दिखाया गया है। मूर्तिकला के विकास में यह उदाहरण मील का पत्थर साबित हुआ और आगे चलकर अमूर्तन कला का प्रदर्शन बना। उनकी कुछ चर्चित शिल्प रचनाएं संथाल फैमिली, मदर एंड चाइल्ड, सुजाता, डांडी यात्रा, मिथुन, मिल कॉल , यक्ष–यक्षिणी पत्थर एवं सीमेंट से बनी यह विशाल प्रतिमा है प्राचीन भारतीय कला से प्रेरित कुषाण काल से प्राप्त मूर्तियों से प्रभावित दिखती हैं। इससे यह पता चलता है कि आधुनिक सोच होने के बावजूद बैज की कला की आत्मा भारतीय रही और अपने समृद्ध कला इतिहास को धरोहर से प्रभावित भी। कला में

उनके अतुल्य योगदान के लिए 1970 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। ललित कला अकादमी ने 1976 में रामकिंकर बैज को फेलोशिप दिया, 1977 में उन्हें विश्वभारती का सर्वोच्च सम्मान दिया और 1979 में उन्हें रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय से डी लिट् की मानद उपाधि दी गई।

आधुनिक भारतीय मूर्तिकारों में श्रेष्ठ शिल्पी रामकिंकर बैज की मूर्ति 'कारखाने की ओर' (1965–66, 275 सेमी. ऊंची) ने हम सभी का ध्यान आकर्षित किया। इसमें दो संथाल औरतें सिर पर भात की पोटली रखे, गीला कपड़ा पहने भागती हुई कारखाने की ओर जा रही हैं। एक बच्चा पैरों से लिपटा हुआ है। दोनों संथाल महिलाओं के चेहरे पर जो कठिन श्रम का उल्लास है। रामकिंकर की इस मूर्ति शिल्प में पारम्परिक भारतीय मूर्तिकला की ठोस मांसल सुगढ़ता तो है ही लेकिन महिलाओं की आकृति में जो तीव्र गति है, वह मौलिक है। वास्तव में रामकिंकर ने भारतीय मूर्तिकला के सौंदर्य और जीवंतता से मानो आत्मसाक्षात्कार कर लिया था।

मिल कॉल यह मूर्तिशिल्प 1965–66 में रामकिंकर बैज द्वारा बनाई गई है जो शांतिनिकेतन में स्थापित है। इसका ढांचा बनाने में लोहे का उपयोग किया गया है तथा इस पर आकार बनाने हेतु सीमेंट गिट्टी व बजरी का प्रयोग किया गया है। इस मूर्ति शिल्प में दो स्त्रियां व बालक को तेज गति से जाते हुए दर्शाया गया है। यह चावल की मील में काम करने वाली मजदूर स्त्रियां हैं जिनको मिल के सायरन की आवाज सुनाई दी जिससे वह मिल की तरफ तेजी से प्रस्थान कर रही हैं इनके पास कपड़े सुखाने का समय भी नहीं है इसलिए वह दौड़ते हुए ही कपड़े सुखा रही हैं। इस संयोजन में आकृतियों को क्लिष्ठ मुद्राओं में गति के साथ दिखाया गया है। तेज गति दिखाने के लिए स्त्रियों के वस्त्रों को उड़ते हुए पैरों से मिट्टी को उछलते हुए प्रदर्शित किया गया है। एक स्त्री को आगे की ओर देखते हुए व दूसरी को पीछे की ओर देखते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति शिल्प में भारतीय और पाश्चात्य तत्वों का समन्वय तथा भारतीय विषय वस्तु के रूप में संथाल जाति के परंपरागत जीवन का आधुनिकता के साथ समन्वय स्थापित करने का द्वंद कुशलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

संथाल फैमिली इसमें संथाल परिवार के एक पुरुष व एक महिला को दिखाया है। महिला के बाएं हाथ में एक शिशु है,जबकि पुरुष के बाएं कंधे पर कावड है जिसके आगे की तरफ वाली टोकरी में एक शिशु को बैठे दिखाया है। जिसके भार को संतुलित करने के लिए पिछली टोकरी में सामान रखा दिखाया है साथ ही एक श्वान (कुत्ते) को भी दिखाया है। बैज को जानवरों से बड़ा लगाव था कुत्ते और बिल्लियां उनकी कार्यशाला और घर में इधर–उधर स्वच्छंद घूमते हैं। महिला के सिर पर भी टोकरी व दरी पट्टी रखे दिखाया गया है यह शिल्प आदम कद से डेढ़ गुना ऊंचा है। मूर्ति शिल्प में जनजाति कृषक गरीब संथाल परिवार का जीवन्त प्रस्तुतीकरण है यह परिवार जीविकोपार्जन हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए दिखाया हैं। कला की दृष्टि से इसमें संतुलन व संबद्धता के सिद्धांत की पालना की गई है। सीमेंट, प्लास्टर तथा पत्थर से उन्होंने अनेक मूर्तियां बनाई है और प्राय प्रफुल्ल, जीवनी शक्ति से भरपूर तथा विकासशील जीवन विषयों को ही उन्होंने मूर्तिमान किया है। रामकिंकर बैज की प्रसिद्ध मूर्ति शिल्प 24 फीट ऊंची यक्ष यक्षिणी की पाषाण मूर्ति वर्तमान में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया नई दिल्ली में स्थापित है।

जहाँ कलाकार अपनी कृतियों का रख–रखाव अपनी जान से भी ज्यादा करते हैं, वहीं रामकिंकर अपनी ही कलाकृतियों के प्रति बेपरवाह थे। उन्होंने अपनी ज्यादातर मूर्तियाँ खुले आसमान के नीचे बनाईं। हद तो तब होता था जब अपने बनाए कैनवास चित्र को अपनी बारिश से टपक रहे जीर्ण–शीर्ण छप्पर को ढकने के लिए लगा देते थे। उन्होंने कभी अपने चित्रों की प्रदर्शनी नहीं की। साक्षात्कार भी बहुत कम दिया। आत्म प्रचार, प्रशंसा की अभिलाषा से सदैव दूर रहे। पिता द्वारा उनकी शादी पहले ही तय कर दी गई थी परंतु उन्होंने अपनी कला साधना में इसे व्यवधान समझा और शादी से इंकार कर दिया था। लेकिन वे प्रकृति के इस विधान में पूरा विश्वास किया करते थे कि जीवन सृजन निरंतर चलता रहना चाहिए। नारी उनके कृतियों में प्रेम, वात्सल्य आदि की प्रतीक थी। तभी तो वे बारम्बार उनकी मूर्ति व चित्र कृ तियों में आती रहीं।

वास्तव में रामकिंकर में वृद्धावस्था के बावजूद काम करने का जो जज्बा था वो आज के युवा कलाकारों के लिए एक चैलेंज है। वृद्धावस्था में ही जबकि कलाकार बमुश्किल कलासृजन कर पाते हैं, बेहद संरक्षण की जरूरत होती है। किंतु रामकिंकर बैज के साथ ऐसा नहीं था। ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित होने से 74 वर्ष की आयु में 2 अगस्त 1980 को उनका निधन हुआ। मूर्तिशिल्प के परम्परागत आधार तत्वों एवं दर्शन में पश्चिम के कला शैली व तत्वों का समावेश कर भारतीय मूर्तिकला को समृद्ध करने के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा। भारतीय कला में उनके अतुल्य योगदान के लिए वर्ष 1970 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया।

आज हम समकालीन भारतीय कला परिदृश्य पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि उनके समकक्ष कोई मूर्तिकार नहीं है। चाहे आप देश को विशालकाय मूर्तियों से भर दें , रामकिंकर की मूर्तियों की भांति, भाव–भंगिमा और गति नहीं ला सकते। दरअसल बुद्ध का रूप–आकार बनाने से पहले अपनी अनुभूति को उस भाव की पराकाष्ठा पर ले जाना होता है। वो धैर्य, सयंम और श्रम–भाव आज के भारतीय मूर्तिकारों में दुर्लभ है।

अध्ययन का उद्देश्य

आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के अग्रदूत रामकिंकर बैज के मूर्तिशिल्प ने नए आयाम जोड़ कर आधुनिक भारतीय मूर्तिकला को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। ऐसे मूर्तिकार की कला को कलाप्रेमियों और कला जगत को उनकी कलात्मक उपलब्धियों से अवगत कराना इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। कला प्रेमीयों को यह अवगत कराना कि भारतीय आधुनिक कला को भारतीय आधार देनेवालों में रामकिंकर बैज योगदान अप्रतिम है।

साहित्यावलोकन

आधुनिक भारत के सर्वोत्कृष्ट कलाकारों में से एक रामकिंकर बैज ना केवल प्रतिष्ठित मूर्तिकार थे बल्कि चित्रकार, ग्राफिक आर्टिस्ट और संगीतकार भी थे। इस अध्ययन के लिए पुस्तकें, समाचार पत्र पत्रिकाओं, शोध पत्रों का चयन किया गया। समकालीन कला–डॉ.ज्योतिष जोशी, कला दीर्घा–अवधेश मिश्र की पुस्तकों का अध्ययन किया गया।

संथाल परिवार

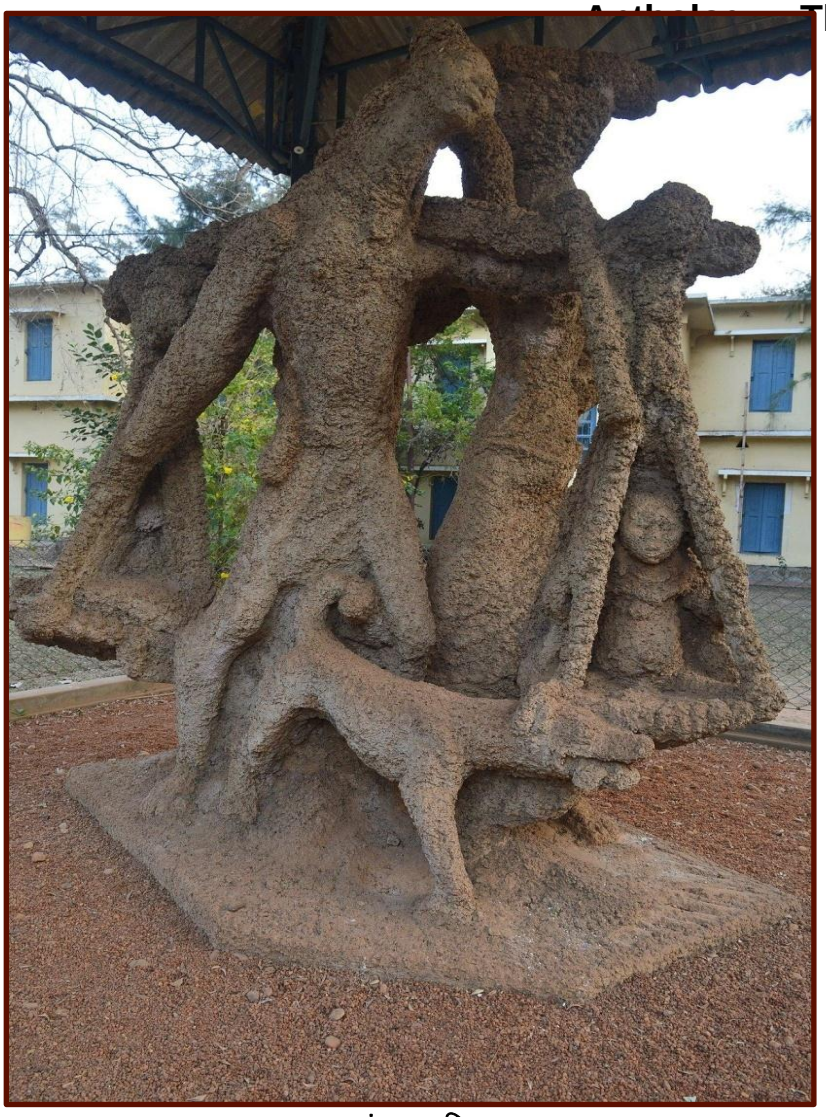

संथाल परिवार

दांडी यात्रा

द पोएट

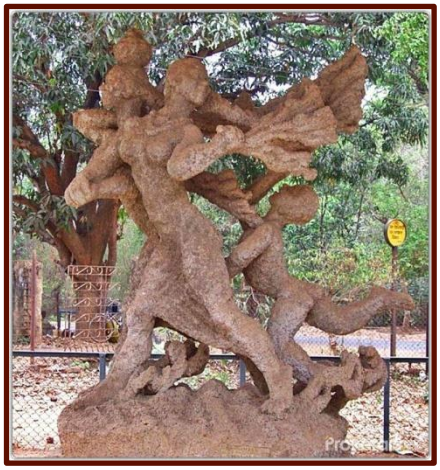

मिल कॉल

शीर्षकहीन

यक्ष यक्षिणी

निष्कर्ष

कृति एक तरह की सर्जना है जो अपने को उसमें विलीन किए बिना पूरी नहीं होती, पूरी होती भी है तो उसमें प्राण तत्व नहीं होता। वह निष्प्राण हो जाती है। कला व्यक्ति को संपूर्ण बनाती है यह कथन सर्वथा सत्य है पर वह सबसे पहले कलाकार को संपूर्ण करती है, उसमें श्रद्धा और विश्वास को प्रतिष्ठित करती है।

रामकिंकर बैज शांतिनिकेतन से जुड़े ऐसे कलाकार थे, जो भारतीय मूर्तिकला को नया सौंदर्य बोध देने में सक्षम है। उन्होंने मूर्तिकला के लिए ना केवल नयी सामग्री चुनी बल्कि मूर्तिकला की लोकधारा के साथ चलते हुए उसे अपनी पहचान वापस दी। वह पहले भारतीय कलाकार थे, जिन्होंने पत्थर, मिट्टी, लकड़ी और धातु जैसी

मूर्तिकला के परंपरागत माध्यमों को छोड़कर सीमेंट, कंक्रीट से मूर्तियां बनाई आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के जनक रामकिंकर के स्मारकीय शिल्पाकृतियों ने सार्वजनिक कला में अपना एक अलग प्रतिमान स्थापित किया है। उन्होंने मूर्ति शिल्प के ऊपरी सतह को चिकना नहीं बनाया बल्कि मिट्टी या सीमेंट के स्वाभाविक टेक्सचर से छोड़ा। उनकी मूर्तियों के यह खुरदरापन ही उनकी कला की विशेषता बन गयी। कला के व्यवसायिक पहलुओं पर उनका ध्यान कभी नहीं गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अवधेश मिश्र– कला दीर्घा न.7 अक्टूबर, 2003 पृष्ठ सं 49*
2. *डॉ.ज्योतिष जोशी– समकालीन कला, ललित कला अकादमी प्रकाशन नई दिल्ली अंक 5 नवंबर, 1985 पृष्ठ सं. 6,9*
3. *डॉ.ज्योतिष जोशी– समकालीन कला, ललित कला अकादमी प्रकाशन नई दिल्ली अंक 28 नवंबर 2005 पृष्ठ सं. 9*
4. *डॉ.ज्योतिष जोशी–समकालीन कला, ललित कला अकादमी प्रकाशन नई दिल्ली, अंक 28 नवंबर 2005 पृष्ठ सं. 17*
5. *निशांत– कला और कलाकार शोध पत्र पृष्ठ सं.2*
6. *Google https%//hi-wikipedia-org*
7. *डॉ. चित्रलेखा सिहं आधुनिक भारतीय समकालीन कला, प्रकाशन साहित्य*
8. *संगम, प्रयागराज पृष्ठ सं. 5*